कुष्ठ रोग से आप की सुरक्षा

जोएल अल्मेडा, एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.

कुष्ठ रोग (कोढ़/लेप्रसी) का इलाज अब संभव है। यह रोग रोगाणु (बैक्टीरिया) की वजह से होता है। भारत का कोई भी सामाजिक और आर्थिक वर्ग इस बीमारी से मुक्त नहीं है। इस रोग से बचने के लिए आप को कुछ बातों को समझना ज़रुरी है।

भारतवर्ष में हर कुछ मिनट में एक नया व्यक्ति कोढ़ से पीड़ित पाया जाता है। कोढ़ को जल्दी पहचानने से इस रोग का इलाज विकलांग होने के पहले शुरू किया जा सकता है। कुष्ठ रोग भारत में अब नहीं पाया जाता है यह सोचना गलत है और आप के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। वर्ल्ड हैल्थ आर्गनाइज़ेशन (W. H. O.) की २०१३ की रिपोर्ट ने यह स्पष्ट किया है कि तभी किसी रोग को उन्मूलित माना जाएगा जब किसी भी परिभाषित क्षेत्र में उस बीमारी का एक भी नया रोगी न पाया जाए।

अगले दस वर्ष में भारतवर्ष में करीब दस लाख अधिक व्यक्तियों में इस रोग के लक्षण पाये जायेंगे। अगर आप एक भारतीय शहर में रहते हैं और आप के आसपास की २५ बिल्डिंगों में करीब १००० व्यक्ति निवास करते हैं, तो इतने लोगों के बीच दस वर्ष में एक नया कुष्ठ रोग के लक्षणों से पीड़ित व्यक्ति पाया जाएगा। पर जो लोग कुष्ठ रोग के लक्षण ज़ाहिर करते हैं वे हिमशैल की शिखर की तरह हैं। वास्तव में, बिना कोई बाहरी लक्षण दिखाते हुए, अगले १० वर्ष में २ करोड़ से लेकर १० करोड़ भारतवासी इस कीटाणु से संक्रमित हो जाएंगे।

कुष्ठ रोग के कीटाणु जो छाँव में सूख कर भारतवर्ष के मौसम में ५ महीने तक शरीर के बाहर जीवित रह सकते हैं, वे आप के शरीर से स्पर्ष पाने पर फिर से रोग का फैलाव शुरू कर सकते हैं। अत्यधिक गरीबी कम होने की वजह से चीन के शनदोंग प्रान्त में ५० वर्ष पहले और नॉर्वे में १०० वर्ष पहले कुष्ठ रोग हर वर्ष १० प्रतिशत की तीव्र गति से कम हुआ। पर भारत की स्थिति इसके विपरीत है। यहॉ पर नये रोगी---जिन की विकृतियॉ उभर चुकी थी---की संख्या २००८-२००९ से २०१३-२०१४ के बीच बढ़ी, घटी नहीं। आप भले अमीर हों, फिर भी दरिद्रता और गरीबी को शहर की घनी बस्तियों और गॉवों से हटाने में ही आप का हित है।

बिना इलाज के कुष्ठ रोग आप के स्नायु (नरवों) को नष्ट कर के आप के दर्द की अनुभूति को खत्म कर देता है। दर्द से वंचित हाथ-पैर, बार-बार चोट खा कर, विकृत हो जाते हैं और उँगलियां तुड़-मुड़ जाती हैं। नष्ट स्नायु (नरवों) के कारण आप के चेहरे और हाथ-पैर की माँस पेशियों का हाल लकवे की बीमारी के समान हो जाता है। इस से आप के हाथ-पैर की उँगलियों को चलाना, चलते वक्त पैर की उँगलियों को जमीन से ऊपर उठाना, यहाँ तक कि ऑखों की पलकों को बंद करना भी असंभव हो जाता है। इस लिये कुष्ठ रोग का निदान और चिकित्सा जल्दी से जल्दी---स्नायु (नर्व) के नष्ट होने के पहले---बहुत जरूरी है।

अगर आप की चमड़ी में किसी भी प्रकार के धब्बे हैं जिनमें पेन की नोक का स्पर्श नहीं महसूस होता है, या आप के कान के नीचे का हिस्सा मोटा और फूला सा है, या आप के हाथ-पैर में चोट बार बार बिना दर्द के लगती है, या आप को अपनी उँगलियों को सीधा करना मुश्किल है, तो आप अपने पास के सरकारी अस्पताल (गवर्नमेंट मेडिकल सेंटर) में जॉच के लिए तुरंत जाइए। वे लोग आपकी नि:शुल्क जाँच और निदान का प्रबंध कर सकते हैं। और अगर आप को कुष्ठ रोग है तो वे उसकी बहुदवाइयों (मल्टिपल ड्रग थेरपी/multiple drug therapy) से नि:शुल्क चिकित्सा भी कर सकते हैं। अगर आप में यह बीमारी है तो आप के घर वालों की जाँच भी जरूरी है क्योंकि आप सब को कुष्ठ के कीटाणु से सम्पर्क हुआ होगा।

बहुदवाइयों से कुष्ठ के कीटाणु बहुत जल्दी मर जाते हैं। थोड़े ही दिन में बहुदवाइयों से कितना भी बढ़ा हुआ और संक्रामक कुष्ठ रोग असंक्रामक हो जाता है।पर बहुदवाइयाँ नष्ट हुए स्नायु (नर्वों) के पतन को नहीं रोक पाती हैं।इस पतन को सुधारने के लिए और इलाज की जरूरत पड़ती है।

बहुदवाइयों के शुरू करने पर दो वर्ष तक स्नायु (नर्वों) का गम्भीर रूप से पतन होता है। आपका शरीर कुष्ठ रोग के मरे कीटाणुओं पर हमला करता है। इस हमले को inflammation (सूजन) बोला जाता है। आपके स्नायु (नर्व) युद्धक्षेत्र बन जाते हैं। स्नायु (नरवों) की सूजन को न्यूरैटिस (neuritis) बोला जाता है। यह अंदरूनी युद्ध स्नायु (नरवों) को हमेशा के लिए खराब कर देता है। जहाँ जहाँ यह युद्ध होता है वहाँ वहाँ शारीरिक विकृति दिखती है। न्यूरैटिस (स्नायु की सूजन) बहुत बार अव्यक्त (चुपचाप) चलती रहती है और आपको तब पता चलता है जब आपके स्नायु (नरवों) का गंभीर नुक्सान हो चुका होता है।

समझदार और अनुभवी कुष्ठ रोग स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को, बहुदवाइयों के शुरू करने के दो वर्ष बाद तक, हर महीने आप के स्नायु (नरवों) के ऊपर जाँच करना बहुत जरूरी है। ऐसे कुशल-सजग कार्यकर्ता पहले मिलते थे। पर अब समय से पहले किये गये दावों, कि कुष्ठ रोग अब भारत में नहीं होता है, के कारण ऐसे कुष्ठ कार्यकर्ताओं का अभाव हो गया है। अनुभवी कुष्ठ कार्यकर्ता अव्यक्त न्यूरैटिस (स्नायु सूजन) को पहचानने में विशेषज्ञ होते हैं। इस कारण वह स्नायु सूजन को रोकने की दवा को सही समय से शुरू कर के आपके स्नायु (नरवों) की रक्षा और अंगों की विकृति को रोक सकते हैं। कुष्ठ रोग संस्थाओं के लिए बेहतर और सस्ता होगा अगर वे स्नायु की स्थिति का समय से जाँच करने की सुविधा लोगों को दें और उन्हें जिंदगी भर की शारीरिक विकृति से बचाएं।

कुष्ठ रोगी, जिनका इलाज हो चुका है, वे विकृत शरीर होने के बावजूद भी दूसरों को आम तौर पर यह रोग नहीं देते हैं। वे हर प्रकार आप ही की तरह हैं सिर्फ इस बात को छोड़ कर कि उनके स्नायु में एक समय कुष्ठ रोग के कीटाणु थे। पर उनके कीटाणु बहुत समय से मर चुके रहते हैं। उन्हें अब आप वही सम्मान और प्रेम दे सकते हैं जो आप दूसरे को देते हैं। आप भी उन व्यक्तियों की तरह हो सकते थे। अगर आप में कुष्ठ रोग की विकृतियाँ उभर चुकी हैं तो आप पुनर्निर्माण सर्जरी, पुनर्वासन और मानसिक समर्थन, भारतीय कुष्ठ रोग संस्थाओं से प्राप्त कर सकते हैं। आप इन सेवाओं को प्राप्त करने की पूरी कोशिश करें।

आप किस तरह से परिवर्तन कर सकते हैं?

अपने आप को और अपने प्रियजनों को कुष्ठ रोग से बचाने के लिए आप कई अभियान चला सकते हैं। आप अपने लोक सभा और विधान सभा के सदस्यों, अपनी पंचायतों और नगर निगम के अधिकारियों को लिखें कि आप कुष्ठ रोग की सूजन का बेहतर इलाज और स्नायु (नर्व) का नुक्सान रोकने की पूरी कोशिश करें। उन्हें आप यह भी बताएँ कि:

१। W. H. O. की २०१३ की आधिकारिक परिभाषा के अनुसार कुष्ठ रोग अभी समाप्त नहीं हुआ है। वास्तव में अगले दस वर्ष में १० लाख हिंदुस्तानी इस रोग से पहली बार दूषित होंगे और राजनीतिज्ञों के खुद के परिवार और मित्रों को भी यह रोग लगने की सम्भावना है। इस कारण कुष्ठ रोग चिकित्सा कार्यक्रमों का उत्तम समर्थन अत्यंत जरूरी है और इस में सभी का लाभ है।

२। भारतीय कुष्ठ रोग कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षित कार्यकर्ता उपलब्ध कराए जाएं जो, बहुदवाइयों के शुरू करने पर दो वर्ष तक, हर महीने कुष्ठ रोगियों के स्नायु की जाँच कर सकें। अगर ऐसा नहीं किया गया तो, बहुदवाइयों के लेने के बावजूद, हर साल कई हजार भारतवासियों के स्नायु का नुक्सान होगा और शरीर की विकृति होगी, क्योंकि उन्हें सूजन रोकने की दवाइयाँ समय पर नहीं मिली।

आप के इस तरह लिखने से आप, आपके परिजनों और दोस्तों को कुष्ठ रोग (कोढ़/लेप्रसी) से सुरक्षा मिलेगी।

इस लेख का जन्म एक भारतीय मेडिकल कॉलेज के भूतपूर्व छात्रों के बीच विचारों के आदान प्रदान के कारण हुआ। इसकी शुरुआत की लिखावटें निम्न-लिखित संस्थाओं और व्यक्तियों को भेजी गयी: वर्ल्ड हैल्थ आर्गेनाइजेशन (WHO), इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ़ एंटी-लेप्रोसी (ILEP), निप्पन फाउंडेशन (Nippon Foundation) नोवार्टिस फाउंडेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (Novartis Foundation for Sustainable Development), अंतर्राष्ट्रीय लेप्रोसी विशेषज्ञों की लेप्रोसी पत्र सूची (leprosy mailing list) और भारत के कई समाज भावी चिकित्सक समूह जो देश के कई प्रांतों में देश हित को निभा रहे हैं। इस लेख के विचार और धारणाओं के लिए सिर्फ लेखक ही जिम्मेदार है।